







## न्यूज ब्रीफ

सैयद वारिस अली  
शाह का दो दिवसीय  
40वां उर्स संपन्न  
फर्मांखादा। शहर के मुहल्ला गड़ी  
अब्दुल मजीद खां दरिया पश्चिम  
रित्यां अस्ताना ए वारिस ए पाक  
में हजरत हामिद हाजी सेयद  
वारिस अली शाह वारसी की 40वां  
दो दिवसीय सालाना उर्स संपन्न  
हो गया। सुबह कुरानखानी का  
सिलसिला जारी हुई, जिसमें मुकामी  
शाहरों ने हजरत हामिद हाजी सेयद  
अली जैनी लहू, जिसमें मुकामी  
शाहरों ने हजरत हामिद हाजी सेयद  
वारिस अली शाह वारसी की शान  
में नानिया कलाम प्रस्तुत कर समां  
बधा। नानिया मुशायरा का आगाज  
तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ।  
शायर मोहम्मद वारिस वारसी,  
मोहम्मद बिलाल, सेपर अस्तार  
अली, मोहम्मद आरिफ, शायर  
बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना  
महेखान ताज कवाल ने कलाम  
पढ़े। नानिया मुशायरा का सचालन  
मोहम्मद वारिस वारसी ने किया।  
शायर बिलाल शफीकी ने भी अपने  
अपने अंदाज में कलाम पढ़े। दोपहर  
3:00 बजे से अस्ताना ए वारिस ए  
पाक में अनीस बैगम वारसी की  
सरपरसी में महापिण्ड ए समा का  
आयोजन किया गया।

## कैथोलिक चर्च में

मनाया गया क्रिसमस  
छिरामाट। कैथोलिक चर्च में  
क्रिसमस का पर्व होलीसांस के साथ  
मनाया गया। प्रभु यीशु के जन्मोत्सव  
पर सौरिय रोड पर लालकपुर गांव  
के निकट रित्यां इस चर्च को गा-  
रिंगी झालारे, गारिंगी रोशनी और  
प्रभु यीशु की दीवारी झाली से सजाया  
गया था। रात 10:30 बजे शुरू हुईं  
प्रार्थना सभा 11:30 बजे तक चली।  
फादर संतोष सेलेसिन ने उपासकों  
को संवेदित करते हुए कहा, प्रभु  
क्षमा का जन्म हमें प्रभु, शारीर और  
क्षमा का अनमोल देंदेश देता है। इस  
अवसर पर सिस्टर असिन, सिस्टर  
रोशना, सिस्टर लिया, विनीस, रुजी,  
जीवन, मनोज कुमार, रमेशचंद्र,  
राजीव कुमार, राजी, रुजुम, विमल एवं कुंवरपाल  
आदि बड़ी संस्कार में उपरित्यत रहे।

63 शिक्षकों को  
सम्मानित किया

गरसहायगंज। बीआरसी पर दो  
दिवसीय कार्यशाला के आयोजन  
में मास्टर ट्रेनरों ने स्पेशल प्रोजेक्ट  
ऑफ पीटीवीटी के तहत कौशल  
शिक्षा के प्रेसिटी विलिंग विषय पर  
चर्चा की गई। शिक्षकों को नारी  
शक्ति मीन मंच की गतिविधियों के  
बारे में जानकारी देकर जारीकर  
किया गया। बुधवार को बीआरसी  
पर कार्यशाला के समापन दिवस पर  
मास्टर ट्रेनर ने स्पेशल प्रोजेक्ट  
ऑफ पीटीवीटी के अंतर्गत कौशल  
शिक्षा एक प्रार्थामिक विवाद के विषय पर  
में सभी उच्च प्रार्थामिक विवाद के  
शिक्षकों से चर्चा की। बीआरसी रमेश  
चंद्र वीधारी ने नारी स्कॉलबन, नारी  
सुरक्षा, नारी समान के अंतर्गत  
मीना मंच की गतिविधियों को बताया।  
कार्यशाला में आप 63 शिक्षकों  
को प्राप्ति प्राप्ति देकर सम्मानित  
किया गया।

सावित्री कोल्ड स्टोरेज  
में आज नेत्र शिविर

कन्नौज। रोटरी कलब की ओर से  
निशुल्क नेत्र ऑपरेशन शिविर चिर  
से 25 दिसंबर को लगाया जाएगा।  
मंगलवार रात 10 बजे से ही जिले में घना  
कोहरा छाया रहा, जिससे दूर्यता घटकर लगभग 10  
मीटर रह गई। न्यूनतम तापमान नौ  
डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।  
कड़ाके की ठंडे के कारण सड़कों  
पर वाहनों की रफ्तार धीमी रही।

मंगलवार को निकारी धूप का  
असर मंगलवार रात कोहरे की रुपू  
में दिखाई दिया। मंगलवार रात 10  
बजे से ही जिले में घना कोहरा छाया  
रहा, जो पूरी रात बना रहा। रात 11 बजे विजिलिटी  
रोडवेज बस स्टैंड और रेलवे स्टेशन  
जलालपुर परवारा में आयोजित  
होगा, जिसमें शंकरा हॉस्पिटल  
कानपुर की डॉक्टरों की टीम द्वारा  
मरीजों की जांच की जाएगी। यह  
बाजार की दोहरी रोटरी कलब शैर्ष  
के उपायक्ष प्रियंका कटियार एवं  
रोटरी कलब कन्नौज के अध्यक्ष  
उमाकांत शुक्राना ने बताया कि  
शिविर में प्राप्ति 10 से दोपहर तक  
तक तक मरीजों की जांच की जाएगी।  
आरोग्य और मरीजों को निशुल्क  
बास द्वारा कानपुर जैसा वारसी  
और ऑपरेशन के बाद वापस लाया  
जायेगा। मरीजों को अपने साथ  
आधार कार्ड की फोटोकॉपी लाना  
अनिवार्य होगा।

बांग्लादेश में हुई हत्या  
के विरोध में पैदल मार्च

अमृतपुर। बुधवार को अमृतपुर क्षेत्र  
में दौड़ चंद्र दास की हत्या के विरोध  
में भारी आक्रमण देखा गया। गोरक्षक  
दल के कार्यकर्ताओं ने अमृतपुर  
बाजार से अमृतपुर तहसील तक  
पैदल मार्च निकाला और घटना के  
प्रति अपना विरोध दर्ज कराया।  
मार्च के दौरान प्रदर्शनकारियों  
ने 'बांग्लादेशी हांश में आओ',  
'मोहम्मद बांग्लादेश', 'भारत  
मार्त की जय' और 'इकावाल  
जिंदाबाद' जैसे नाम लगाए।  
कार्यकर्ताओं ने इस हत्या को मानवता  
के खिलाफ अप्राप्त बताते हुए कही  
कार्यवाई की मांग की।

बांग्लादेश में हिंदुओं की हत्या  
पर फूटा गुस्सा, फूंका पुतला

हिंदू संगठनों ने रोडवेज बस स्टैंड के सामने जीटी रोड पर किया प्रदर्शन  
कार्यालय संवाददाता कन्नौज



अमृत विचार। बांग्लादेश में हिंदुओं की हत्या से भड़के विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल व अन्य हिंदू संगठनों ने जीटी रोड पर किया प्रदर्शन।

बांग्लादेश में हाल ही में हिंदू युवा

दीपू चंद्र दास की पेड़ पर लटका कर हत्या कर दी गई। इसके बाद पैटकर आग से जलाकर फूंका, बजरंग दल व अन्य हिंदू परिषद पर लटका कर विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल व अन्य हिंदू संगठनों के साथ अन्याय किया जा रहा है। नारी शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ। शायर मोहम्मद बिलाल, सेपर अस्तार अली, मोहम्मद आरिफ, शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ।

बांग्लादेश में हाल ही में हिंदू युवा

दीपू चंद्र दास की पेड़ पर लटका कर हत्या कर दी गई। इसके बाद पैटकर आग से जलाकर फूंका, बजरंग दल व अन्य हिंदू संगठनों के साथ अन्याय किया जा रहा है। नारी शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ। शायर मोहम्मद बिलाल, सेपर अस्तार अली, मोहम्मद आरिफ, शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ।

बांग्लादेश में हाल ही में हिंदू युवा

दीपू चंद्र दास की पेड़ पर लटका कर हत्या कर दी गई। इसके बाद पैटकर आग से जलाकर फूंका, बजरंग दल व अन्य हिंदू संगठनों के साथ अन्याय किया जा रहा है। नारी शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ। शायर मोहम्मद बिलाल, सेपर अस्तार अली, मोहम्मद आरिफ, शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ।

बांग्लादेश में हाल ही में हिंदू युवा

दीपू चंद्र दास की पेड़ पर लटका कर हत्या कर दी गई। इसके बाद पैटकर आग से जलाकर फूंका, बजरंग दल व अन्य हिंदू संगठनों के साथ अन्याय किया जा रहा है। नारी शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ। शायर मोहम्मद बिलाल, सेपर अस्तार अली, मोहम्मद आरिफ, शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ।

बांग्लादेश में हाल ही में हिंदू युवा

दीपू चंद्र दास की पेड़ पर लटका कर हत्या कर दी गई। इसके बाद पैटकर आग से जलाकर फूंका, बजरंग दल व अन्य हिंदू संगठनों के साथ अन्याय किया जा रहा है। नारी शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ। शायर मोहम्मद बिलाल, सेपर अस्तार अली, मोहम्मद आरिफ, शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ।

बांग्लादेश में हाल ही में हिंदू युवा

दीपू चंद्र दास की पेड़ पर लटका कर हत्या कर दी गई। इसके बाद पैटकर आग से जलाकर फूंका, बजरंग दल व अन्य हिंदू संगठनों के साथ अन्याय किया जा रहा है। नारी शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ। शायर मोहम्मद बिलाल, सेपर अस्तार अली, मोहम्मद आरिफ, शायर बिलाल शफीकी, कलाम मुन्ना महेखान ताज कवाल ने कलाम प्रस्तुत कर समां बधा। नानिया मुशायरा का आगाज तिलावते कुरांग ए पाक से शुरू हुआ।

बांग्लादेश म













छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।

-अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री

## त्रिपक्षीय वार्ता ही समाधान

उत्तर-पूर्व भारत एक बार फिर ऐसे मोड़ पर खड़ा दिखाया देता है, जहां छोटी-सी चिंगारी बड़े राजनीतिक और सामाजिक विस्फोट का रूप ले सकती है। एक ओर पड़ोसी बांगलादेश में अस्थिरता और हिंसा का माहौल है, दूसरी ओर मणिपुर अभी भी पूरी तरह सामान्य नहीं हो पाया है। ऐसे समय में कार्बों आंगलोंग में भड़की हिंसा को हल्के में लेना एक गंभीर भूल होगी। यह घटना केवल एक स्थानीय विवाद नहीं, बल्कि उत्तर-पूर्व की सर्वेदर्शील राजनीतिक सामाजिक संरचना की चेतावनी है। कार्बों आंगलोंग, जो भारतीय सर्विधान की छठी अनुसूची के तहत एक स्वयं शक्ति हैं, लंबे समय से भूमि पर, पहचान और अधिकारों के प्रसरण से जु़रूत रहा है। हालिया विवाद का केंद्र ग्रामीण आंगलोंग रिवर और पेंगवर चारागांव तीव्र विवाद के बीच हटाने की मांग रही है। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि अन्य राज्यों से आए 'बासी लोगों' ने अराक्षित भूमि पर कब्जा कर लिया है।

सबल यह है कि यह कब्जा अचानक नहीं हुआ; वर्षों की प्रशासनिक शिथिलता, राजनीतिक संरक्षण और नियन्त्रण की कमी ने इसे संभव बनाया। जब ऐसे मामलों को समय रहते नहीं सुलझाया जाता, तो असंतोष अंततः हिंसा का रास्ता पकड़ता ही है। भाजपा के नेतृत्व वाली कार्बों आंगलोंग स्वायत्तशासी परिवर्तन के मुख्य कार्यकारी सदस्य के घर को आग लगाने की घटना इस हिंसा को और गंभीर बना देती है। यह सत्ता-संरचना पर सीधी हमला है। इससे यह आशंका जन्मती है कि यह संघर्ष केवल दो सामाजिक गुटों तक सीमित नहीं है, इसके पांछे राजनीतिक स्वतंत्रता के द्वारा भूमि और पहचान के मुद्दे अक्सर यहां राजनीतिक मोहरे बनते रहे हैं। जब लोग 15 दिनों से शास्त्रीय धरने पर बैठे थे, तब संघर्ष के जरूरी समाधान क्यों नहीं निकाला गया? प्रशासन की ऐसी विफलता हिंसा को न्योती है। अवैध रूप से रह रहे लोगों को बेद्भव करने की मांग सैद्धांतिक रूप से जायज़ हो सकती है। इसे संवैधानिक और न्यायिक दायरे में रहकर ही पूरा किया जा सकता है। अदालतों के हस्तक्षेप और मानवाधिकारों की अनदेखी से स्थिति और विस्फोट हो सकती है।

कार्बों आंगलोंग का पश्चिमी हिस्सा पहले भी हिंसा का गवाह रहा है। यह तथ्य बताता है कि भूल समस्याओं- भूमि प्रवर्धन, स्वायत्त असंतोष और स्थानीय-बाहीनी संतुलन की इमानदारी से नहीं सुलझाया गया। राज्य सरकार द्वारा अतिरिक्त सुख्ता बलों की तैनाती औं हाई-लेवल मॉनिटरिंग ताकालिक स्थानीय के लिए आवश्यक है, लेकिन यह स्थानीय समाधान नहीं हो सकता। पुलिस अफसरों के तबादले प्रशासनिक संदेशों तो देते हैं, पर भरोसा तभी बनेगा जब निष्पक्ष जांच और जवाबदेही हो। स्थानीय समुदाय, प्रशासन और राजनीतिक प्रतिनिधियों के बीच सरकार द्वारा प्रस्तावित विपक्षीय वार्ता यदि इमानदारी से की जाए, तो यह समाधान की दिशा में सार्थक कदम हो सकती है। इसके साथ-साथ जरूरत है पारदर्शी भूमि सेवकंश, कानूनी प्रक्रिया के तहत पुनर्वास नीति और स्वायत्त परिषदों को वास्तविक निर्णय-सामर्थ्य देने की। उत्तर-पूर्व में शांति केवल बंटूक और बल से नहीं, बल्कि संवाद, संवैधानिक संवेदनशीलता और समयबद्ध न्याय से ही स्थापित हो सकती है।

## प्रसंगवर्ता

## पुष्कर से आते हैं ख्वाजा की दरगाह के फूल

बाहरीं शताब्दी के महान् सूफी संत ख्वाजा मोर्तुम्हीन चिश्ती का 814वां सालाना उर्स समारोह इन दिनों अजमेर में मनाया जा रहा है। यहां के बारे में मशहूर है कि दरगाह पर चढ़ाए जाने वाले फूल अक्सर पुक्कर से मंगाए जाते हैं और पुक्कर के मंदिर और अन्य धार्मिक स्थलों पर चढ़ावे के लिए पुजा सामग्री की खीलें दरगाह ख्वाजा साहब के बाजार से ही जाती हैं। यह विंडू-मुस्तान भाईचारा, आपसी सीहाई और सुखदूर्व कुटुंबकम् की बेहतरीन मिसाल है। अजमेर में कभी भी हाई-मूल्य तनाव नहीं देखा गया। यहां दूर्घट धर्मी के लिए रमजान में दरगाह आकर रोज़ा खुलते हैं। चिंटिया ईस्ट इंडिया कंपनी के अफसर, इतिहासकार और प्रशंसन अंग्रेज़ लेखक कर्नल जेम्स टॉप (1782-1835), जिन्हें राजस्थान के इतिहास का पितामह भी कहा गया है, ने अपनी मशहूर किताब 'एनल्स एंड एंट्रिक्विटीज ऑफ राजस्थान' में लिखा है, 'मैंने हिन्दुस्तान में एक कब्र को राज करते देखा हूँ।'

आज से कबीर आट सौ साल पहले एक दरवश जारी रीत का कठिन सफर तय करता हुआ सौहार्द का पैगाम लिए ईरान से हिन्दुस्तान के अजमेर पहुंचा, तो जो भी उसके पास आया उसी का हांकर रह गया। उसके दर पर दीन-ओं-धी, अमीर-तारीफ़, छोटे-बड़े कीरी भी तरह का भेदभाव नहीं देखा गया। यहां दूर्घट धर्मी के लिए रमजान में दरगाह आकर रोज़ा खुलते हैं। यहां दूर्घट धर्मी के लिए जारी राज करते देखो।

ज्यादा वर्त बीत गया, लेकिन राजा हो या रंग, सभी मज़हब के लोगों ने, जिसने भी उनकी चौखट चूमी वह खाली नहीं गया, इसीलिए उन्हें 'गरीब नवाज़' (गरीबों का हमदर्द) और 'सुल्तान-ए-हिंद' के नाम से भी जाना गया।

तेरहांसी सदी में दिल्ली के सुल्तान इल्तुमिश ने पहली बार दरगाह की यात्रा की। बाद में मुगल अकबर और जहांगीर जैसे कई शासकों ने इसका जींज़ोऱ और विस्तार किया। दरगाह का उन्देश दरगाह के संदर्भ में आंजन निर्माण दिखाया गया। इसके बाद ने भूमि और धर्मान्वयन के दोषों के नुमांडे भी दरगाह के लिए चारों दिशाएँ भेजते हैं। हाल ताम दरगाह के बेतर प्राधानमंत्री पड़ित जवाहरलाल नेहरू ने भी ख्वाजा के दरबार में हजारी दी। उन्होंने दरगाह के महाफिलखान की सीढ़ियों पर चढ़ाव करवाया तो दरगाह के लिए चारों दिशाएँ देखते हैं।

महान कवि रवींद्रनाथ टौरो, सरोजिनी नायड़ू, पैडिंट मदनमोहन नालवीय से लेकर जयप्रकाश नारायण, इंदिरा गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी जैसी विख्यात हस्तियोंने ख्वाजा के संदेश को समझा, जाना और अजमेर आकर अपनी अक्षीदत के फूल पेश किए। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने दरगाह पर चढ़ाव के लिए चारों दिशाएँ भेजते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दरगाह के लिए चारों दिशाएँ भेजते हैं।

तेरहांसी सदी में दिल्ली के सुल्तान इल्तुमिश ने पहली बार दरगाह की यात्रा की। बाद में मुगल अकबर और जहांगीर जैसे कई शासकों ने इसका जींज़ोऱ और विस्तार किया। दरगाह का उन्देश दरगाह के संदर्भ में आंजन निर्माण दिखाया गया। इसके बाद ने भूमि और धर्मान्वयन के दोषों के नुमांडे भी दरगाह के लिए चारों दिशाएँ भेजते हैं। हाल ताम दरगाह के बेतर प्राधानमंत्री पड़ित जवाहरलाल नेहरू ने भी ख्वाजा के दरबार में हजारी दी। उन्होंने दरगाह के महाफिलखान की सीढ़ियों पर चढ़ाव करवाया तो दरगाह के लिए चारों दिशाएँ देखते हैं।

दरगाह ख्वाजा साहब अधिनियम-1955, दरगाह के प्रशासन और प्रबंधन को विनियमित करता है। दरगाह की प्रबंधन करता है, जो दरगाह के बेतर प्रशासन और अटल बिहारी वाजपेयी के लिए जिम्मेदार है। भारत सरकार के अत्यंत-संख्यक मामलों के मांत्रालय द्वारा गठित यह कर्मचारी दरगाह के प्रबंधन की शक्ति देता है।

दरगाह ख्वाजा साहब अधिनियम-1955, दरगाह के प्रशासन और प्रबंधन को विनियमित करता है। दरगाह की प्रबंधन करता है, जो दरगाह के बेतर प्रशासन और अटल बिहारी वाजपेयी के लिए जिम्मेदार है। भारत सरकार के अत्यंत-संख्यक मामलों के मांत्रालय द्वारा गठित यह कर्मचारी दरगाह के प्रबंधन की शक्ति देता है।

## अरावली: कानूनी सीमा विकास की नैतिकता



डॉ. श्याम भाद्रा

असिस्टेंट प्रोफेसर,  
जीएलए बीवीरेसी



विश्व की प्राचीनतम पर्वत शृंखलाओं में शामिल अरावली आज जिस बहस के केंद्र में है, वह बहस केवल संरक्षण बनाम विकास की नहीं चलती। अरावली की तलहटी, ज्ञाझीदार बाज़ और जल ग्रहण क्षेत्र वह विकास चाहते हैं- इस मूल प्रस्तुति की है। अरावली पर्वतमाला केवल एक भौगोलिक संरचना नहीं है, यह उत्तर-पश्चिम भारत की प्रबंधन करती है। यदि कोई व्यावसायिक निर्णय इन सेवाओं को नष्ट करता है, तो वह अल्पकालिक सुरक्षा के बारे में विवेचन करता है। अरावली पर्वतमाला के संरक्षण बनाम विकास की नियंत्रण और स्थानीय स्वतंत्रता की आधारशिला है।

विवाद की तरफ फैला होता है कि व्यावसायिक प्रक्रियाओं से हुआ है। वर्षों जल संचयन, भूजल पुरुषरंग, तापमान संतुलन और मरुस्थलीकरण पर नियंत्रण- ये सभी कार्य पहाड़ मौन रूप से करते हैं। एक बार व्यावसायिक भूमि और प्रक्रिया के केंद्र में रहने के बाद राजनीतिक समाज को बदल दिया जाता है। अरावली की तरफ विवादित विकास की तरफ विवरणीय भूमि नहीं है, बल्कि व्यावसायिक भूमि और प्रक्रिया की तरफ विवरणीय भूमि है। अरावली की तरफ विवरणीय भूमि नहीं है, बल्कि व्यावसायिक भूमि और प्रक्रिया की तरफ विवरणीय भूमि है। अरावली की तरफ विवरणीय भूमि नहीं है, बल्कि व्यावसायिक भूमि और प्रक्रिया की तरफ विवरणीय भूमि है। अरावली की तरफ विवरणीय भूमि नहीं है, बल







